

## **NEERAJ®**

# M.H.D. -22 कबीर का विशेष अध्ययन

**Chapter Wise Reference Book Including Many Solved Sample Papers** 

-Based on

# 

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Anjana Mehrish, M.A., M.Phil. (Hindi)



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: -

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ **320/**-

Published by:



(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail: info@neerajbooks.com Website: www.neerajbooks.com

#### © Copyright Reserved with the Publishers only.

#### Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

#### Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- 4. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

#### Get books by Post & Pay Cash on Delivery:

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

#### <u>Content</u>

# कबीर का विशेष अध्ययन

Question Paper-	1		
Question Paper-	1		
Question Paper-	1-2		
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved)		1-2	
Question Paper	—Exam Held in February-2021 (Solved)	1-2	
S.No.	Chapterwise Reference Book	Page	
कबीर का जीवन	और युग		
1. कबीर का र्ज	ोवन और उनका साहित्य	1	
2. कबीर का यु	8		
3. निर्गुण भक्ति	15		
4. गोरखनाथ, कबीर और तुलसीदास			
5. गुरुग्रंथ साहि	41		
ऋबीर का चिंतन			
6. कबीर के दा	51		
7. कबीर की क	विता में दर्शन	65	
8. कबीर की सामाजिक मान्यताएं			
9. कबीर और ध	प्रार्मिक रूढ़िवाद	83	

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
कबीर की कला		
10. कबीर की भ	ाषा	94
11. कबीर काव्य	में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली	106
12. कबीर के क	गव्य में छंद और अलंकार	116
13. कबीर की व	विता में व्यंग्य	124
कबीर का मूल्यां	कन और प्रासंगिकता	
14. दलित विमर्श	और कबीर	130
15. हिंदी आलोच	ाना में कबीर	135
16. कबीर की व	विताओं का विश्लेषण	149
17. कबीर और	मानव मुक्ति की धारणा	155
18. कबीर का ऐ	तिहासिक अवदान	163
महत्त्वपूर्ण उ	अंशों की व्याख्या	171

# Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:



www.neerajbooks.com

#### QUESTION PAPER

June - 2023

(Solved)

#### कबीर का विशेष अध्ययन

M.H.D.-22

समय : 2 घण्टे | [ अधिकतम अंक : 50

नोट: प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सिंहत व्याख्या कीजिए-

(क) कबीर यह मन कत गया, जो मन होता काल्हि। डूंगरि बूठा मेह ज्यूँ गया, निवाँणाँ चालि॥

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-18, पृष्ठ-173, 'व्याख्या 13'

(ख) कबीर हरी पीयरी, चूना ऊजल भाइ। राम सनेही यूँ मिले, दुन्यूँ बरन गँवाइ॥

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-18, पृष्ठ-74, 'व्याख्या 22'

(ग) बोलत बोलत बढ़ै बिकारा, बिन बोल्याँ क्यूँ दोट विचारा

होइ विचारा संत मिलै कहु कहिये कहिये, मिलै असंत

मुष्टि करि रहिये॥ ग्यानी सूँ बोल्या हितकारी, मूरिख सूँ बोल्याँ

झष बारी॥ कहै कबीर आधा घट डोलै, भरया होइ तौ मुषाँ न बोलै॥

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-18, पृष्ठ-178, 'व्याख्या 4'

(घ) मन मारया ममता मुई, अहं गई सब छूटि। जोगी था सो रिम गया, आसिण रही विभूति॥ उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-18, पृष्ठ-175, 'व्याख्या 27' प्रश्न 2. कबीर की कविताओं में अभिव्यक्त भक्ति

प्रश्न 2. कबार का कावताआ म आभव्यक्त भाक्त चेतना के मुल उपादानों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-3, पृष्ठ-17, 'कबीर की निर्गुण भक्ति के मूल उपादान' प्रश्न 3. कबीर के काव्य में 'माया' के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-6, पृष्ठ-52, 'माया की अवधारणा' तथा अध्याय-7, पृष्ठ-65, 'माया'

प्रश्न 4. कबीर की किवता में छंदों के प्रयोग और उनके महत्त्व पर विचार कीजिए।

**उत्तर—संदर्भ—**देखें अध्याय-12, पृष्ठ-116, 'कबीर के काव्य में छंद'

प्रश्न 5. कबीर की कविताओं में अभिव्यक्त व्यंग्य की प्रमुख विशेषताओं का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-12, पृष्ठ-127, प्रश्न 2

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए-

(क) उलटबाँसी

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-109, 'उलटबाँसी'

- (ख) कबीर काव्य में अभिव्यक्त अद्वैतवादी चेतना उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-56, प्रश्न 1
- (ग) कबीर की कविता में अलंकारों का महत्त्व उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-12, पृष्ठ-118, 'कबीर के काव्य में अलंकार'
  - (घ) कबीर काव्य और नाथ पंथ उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-35, प्रश्न 2

#### QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

#### कबीर का विशेष अध्ययन

M.H.D.-22

समय : 2 घण्टे | [ अधिकतम अंक : 50

नोट: प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सिंहत व्याख्या कीजिए-

(क) कबीर हिर का भाँवता, दूरैं थैं दीसंत। तन षीणा मन उनमनाँ, जग रूठड़ा फिरंत उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-18, पृष्ठ-172, 'व्याख्या 9'

(ख) दुनियाँ के धोखें मुवा, चलै जु कुल की काँणि। तब कुल किसका लाजसी, जब ले धरया मसाँणि

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-18, पृष्ठ-172, 'व्याख्या 11'

(ग) कबीर इस संसार का, झूठा माया मोह। जिहिं घर जिता बँधावणाँ, तिहिं घरि तिता अंदोह उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-18, पृष्ठ-173, 'व्याख्या 14'

(घ) हरि ठग जग को ठगौरी लाई,

हिर के वियोग कैसे जीऊँ मेरी माई
कौन पुरुष को काकी नारी, अभिअंतरि तुम्ह

लेहु बिचारी

कौन पूत को काको बाप, कौन मरें कौन करै संताप

कहै कबीर ठग सौं मन माना, गई ठगौरी ठग पहिचाना

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-18, पृष्ठ-182, 'व्याख्या 15' प्रश्न 2. कबीर के युग की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-2, पृष्ठ-9, 'सामाजिक परिप्रेक्ष्य', 'सांस्कृतिक-साहित्यिक परिप्रेक्ष्य'

प्रश्न 3. कबीर के अध्ययन में आदिग्रंथ के महत्त्व पर विचार कीजिए।

**उत्तर – संदर्भ –** देखें अध्याय-5, पृष्ठ-43, 'आदिग्रंथ में कबीर : महत्त्व और प्रयोजन'

प्रश्न 4. कबीर के रूढ़िवादी संबंधी विचारों का उदाहरण सहित विलेषण कीजिए। **उत्तर-संदर्भ**-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-86, प्रश्न 1

प्रश्न 5. कबीर की 'ब्रह्म' संबंधी अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-57, प्रश्न 2

प्रश्न 6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए—

(क) खेचरी मुद्रा

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-108, 'खेचरी मुद्रा'

(ख) मध्ययुगीन समाज और कबीर

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-8, पृष्ठ-73, 'मध्ययुगीन समाज और कबीर'

#### (ग) कबीर ग्रंथावली

उत्तर – कबीर के प्रामाणिक पाठ का दूसरा प्रयत्न सन् 1928 में श्यामसुंदर दास ने 'कबीर ग्रंथावली' के रूप में किया। उन्होंने दो प्राचीन हस्तप्रतिलिपियों के आधार पर यह कार्य किया। इसमें कुछ 809 साखियों, 400 पदों और रमैनियों को सिम्मिलित किया गया है। यह कबीर का पूर्ण प्रामाणिक पाठ तो नहीं कहा जा सकता, परंतु इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास अवश्य माना जा सकता है।

भारतीय हिंदी परिषद्, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ओर से सन् 1961 में डॉ. पारसनाथ तिवारी ने नए सिरे से 'कबीर ग्रंथावली' को संपादित किया। कबीर के नाम से मिलने वाली 4500 साखियों, लगभग 1600 पदों, 134 रमैनियों के गहन अध्ययन से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि 20 पद (या सबद), 20 रमैनिया, 744 साखियां प्रामाणिक रूप से कबीर की सिद्ध होती हैं।

#### (घ) हिंदी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में कबीर

**उत्तर-संदर्भ-**देखें अध्याय-15, पृष्ठ-137, 'हिंदी साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में कबीर'

# Sample Preview of The Chapter

Published by:



www.neerajbooks.com

# कबीर का विशेष अध्ययन

#### कबीर का जीवन और युग

### कबीर का जीवन और उनका साहित्य



#### परिचय

कबीर मध्ययुगीन हिंदी भिक्त काव्यधारा के महत्त्वपूर्ण किव और संत थे। वे हिंदी साहित्य के भिक्तिकालीन युग में ज्ञानाश्रयी-निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे। भिक्तिकाल की सुदीर्घ परंपरा में कबीर उन महत्त्वपूर्ण किवयों में से हैं, जो आज भी प्रासंगिक है। कबीर प्रखर प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण करते हुए चिंतन के नये आयाम विकसित किये। उन्होंने 'कागद लेखी' की जगह 'आंखिन देखी' को अधिक महत्त्व दिया। कबीर जनसाधारण के सबसे लोकप्रिय किवयों में से थे, इसीलिए साधारण जनता की किवदंतियों और जनश्रुतियों में उनकी स्मृति सुरक्षित है।

कबीर सच्चे भक्त, धर्मिनरपेक्ष चिंतक, सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों का घोर विरोध करने वाले किव थे। जनसाधारण के हितों की रक्षा करना ही उनकी किवता का लक्ष्य था। आध्यात्मक क्षेत्र में कबीर ने अद्वैतवाद को अपनाया था और सामाजिक क्षेत्र में समानता और बंधुत्व के भाव को केन्द्र में रखकर सामाजिक अद्वैत को स्वीकृति दी थी। कबीर की रचनाओं ने हिंदी प्रदेश के भिक्त आंदोलन को बहुत गहरे स्तर तक प्रभावित किया। उनका लेखन, उनके विचार सिखों के आदि-ग्रंथ में भी दृष्टिगोचर होते हैं। कबीर पंथ नामक धार्मिक संप्रदाय इनकी शिक्षाओं के अनुयायी है।

#### अध्याय का विहंगावलोकन

#### कबीर का जीवन

मध्ययुगीन हिंदी भक्त किवयों में कबीर का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है, परंतु कबीर के जीवनवृत के बारे में प्रामाणिक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। कबीर ने स्वयं अपने जीवन के संदर्भ में कभी कुछ विशेष रूप से नहीं कहा। उनके दोहों, साखियों में कहीं-कहीं कुछ छुटपुट उल्लेख मिलता है, जोिक अपर्याप्त माना जा सकता है। कबीर के समकालीन और थोड़े परवर्ती किवयों ने, उनके भक्तों ने तथा कबीर पंथ के श्रदालुओं ने उनके विषय में जो कहा है, वह भी किंवदंतियों, अलौिकक घटनाओं से परिपूर्ण प्रशंसात्मक टिप्पणियां मानी जा सकती हैं।

1. प्रशस्तियां—उनके समकालीन कवियों में संत रैदास, पीपा, सेन आदि ने उनके विषय में कुछ उक्तियाँ लिखी हैं। दाद् दयाल (1544–1603) पर कबीर के जीवन और साधना का गहरा प्रभाव दिखाई देता है; जैसे—

#### हरि रस लागे ना दे, पीपा अरु रैदास। पीवत कबीरा नाथ क्या, आजहूँ प्रेम पियास।

इसके अतिरिक्त रज्जब, मलूकदास, धर्मदास, नाभादास आदि की लेखनी में भी कबीर के आदर्शों और विचारों की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

कबीर की जन्मतिथि और जन्म स्थान के विषय में विद्वानों ने काफी मतभेद है। कुछ विद्वान कबीर का जन्म संवत् 1455 मानते है, तो कुछ 1456, परंतु किसी भी तिथि के विषय में कोई भी ठोस प्रमाण नहीं है। किंवदंतियों, जनश्रुतियों, दोहों के आधार पर कबीर की जन्म तिथि 1455 या उसके आस-पास ही मानी जा सकती है। कबीर के जन्म स्थान को लेकर भी पर्याप्त मतभेद है, किंतु अधिकतर विद्वान इनका जन्म स्थान 'काशी' ही मानते हैं, जिसकी पुष्टि स्वयं कबीर का यह कथन भी करता है—

#### "काशी में परगट भए, रामानंद चेताए।"

2. जन्मतिथि और जन्मस्थान-जनश्रुतियां भी काशी के पक्ष में ही है।

जन्मतिथि, जन्मस्थान के साथ-साथ कबीर के परिवार के विषय में भी कुछ प्रामाणिक रूप से नहीं कहा जा सकता। उन्होंने अपने पदों और साखियों में 'राम' के साथ ही अपने हर संबंध को उद्धृत किया है।

3. परिवार: माता-पिता-प्रचलित किंवदितयों और जनश्रुतियों के आधार पर कबीर को एक गरीब जुलाहा दंपित नीरु-नीमा का पालित पुत्र माना जाता है। पंडित रामचन्द्र शुक्ल, पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वान भी इन्हीं जनश्रुतियों का अनुकरण करते हैं। कबीर के नामकरण के विषय में भी एक जनश्रुति है कि उनके माता-पिता ने एक मौलवी के पास जाकर उनका नामकरण किया इस प्रकार शायद जन्म के साथ ही वो किसी एक धर्म के बंधन में नहीं बंधे। उनके पारिवारिक परिवेश ने उनके व्यक्तित्व में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

#### 2 / NEERAJ : कबीर का विशेष अध्ययन

4. विवाह, पत्नी और संतान—कबीर के अनुयायी कबीर को अविवाहित, त्यागी, गृहस्थ संत मानते हैं, किंतु कुछ जनश्रुतियां कबीर के विवाहित होने और संतान होने का भी समर्थन करती हैं। स्वयं कबीर के एक आत्म-कथ्य में ऐसा आभास मिलता है—

#### सहजै सहजै सब गये, सुत बित कांमणि काम। एकमेक हुवै मिलि रहुया दास कबीरा राम।

कबीर की इस साखी को भिक्त प्रेरक मुहावरा भी माना जा सकता है, लेकिन यदि इसे सत्य माना जाए तो उनके गृहस्थ होने का संकेत मिलता है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी कुछ इसी तरह के 'सलोग' भी मिलते हैं।

5. शिक्षा-दीक्षा और शिष्य परंपरा—शिक्षा और ज्ञानार्जन की दो परंपराएँ रही हैं—एक श्रुति ज्ञान परंपरा और दूसरी पुस्तकीय ज्ञान परंपरा। सामान्यत: सभी विद्वान अनुयायी कबीर को पारंपरिक शिक्षा की दृष्टि से अनपढ़ मानते हैं। उन्होंने जो भी ज्ञान अर्जन किया, वह सत्संगति से और लोक-जीवन से जुड़कर किया।

# "पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय।" "तू कहता कागद की लेखी, हौं कहता आंखिन की देखी।"

उनके ये प्रसिद्ध कथन स्वयं इस तथ्य के प्रमाण हैं कि कबीर का महत्त्व पोथी ज्ञान और लेखन के कारण नहीं, अपितु मुख वचन या 'शब्द साधना' के कारण है।

#### 'मिस कागद छुओ नहीं, कलम गिह निहं हाथ। चारों जुग को महातम, कबीर मुखिहं जनाई बात।

कबीर ने अपने जीवन में गुरु को सर्वोपिर स्थान दिया है। वे शास्त्र की अपेक्षा सद्गुरु के शब्द को ही सबसे बड़ा प्रमाण मानते थे। उन्होंने गुरु को ईश्वर के समान माना है। जनश्रुतियों और कबीर पंथ के अनुयायियों ने रामानंद को कबीर का गुरु माना है। स्वयं कबीर का कथन इसकी पुष्टि करता है—

"काशी में हम प्रकट भए, रामानंद चेताये। "सद्गुरु के परताप से मिटि गयौ सब दुख-दंद। कह कबीर दुबिधा मिटि, गुरु मिलिया रामानन्द।"

कबीर के समसामायिक संतों और कवियों के साथ आधुनिक हिंदी विद्वानों का एक बहुत बड़ा वर्ग भी रामानंद को कबीर के गुरु के रूप में मान्यता देता है।

कबीर ने स्वयं किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया, किंतु उनके विचारों, उनके चिंतन, उनकी लोक-चेतना से प्रभावित होकर उनकी स्वयं ही एक शिष्य परंपरा बन गई, जिसमें कमाल, पद्मनाभ, धर्मदास, रामकृपाल, नीर, धीर, तत्वा, जीवा, जागूदास, मलूकदास, गरीबदास आदि प्रमुख माने जाते हैं।

6. मृत्यु, मृत्युस्थान और उससे सम्बद्ध घटनाएं—कबीर की यह दृढ़ मान्यता थी कि मनुष्य को उसके कार्यों के अनुसार ही गति मिलती है, किसी स्थान विशेष के कारण नहीं। अपनी इसी मान्यता को सिद्ध करने के लिए अंत समय में वे 'मगहर' चले गये, क्योंकि उस समय लोगों का यह मानना था कि 'काशी' में मरने पर स्वर्ग और 'मगहर' में मरने पर नरक मिलता है। उन्होंने संवत् 1575 के

आस-पास 'मगहर' में अंतिम सांस ली। आज भी वहाँ उनकी समाधि स्थित है।

#### कबीर का साहित्य

कबीर का पुरा जीवन मध्ययुगीन भारतीय समाज व्यवस्था की अमानवीय विसंगति और विडम्बना का जीता-जागता उदाहरण है। कबीर उन लोगों में से थे, जो नग्ण्य परिवेश में पालित-पोषित होकर भी अपने असाधारण कर्म से, लोक-कल्याण की भावना से, अपने पुरुषार्थ से एक इतिहासपुरुष बन गये। जिस प्रकार उनके जीवन-वृत्त के विषय में प्रामाणिक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता, यही स्थिति उनके साहित्य की भी है। कबीर का यह अंत: साक्ष्य 'मिस कागद छुओ नहीं' इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जो कुछ कहा, वह मौखिक ही था। उन्होंने स्वयं उनका लेखन-संपादन नहीं किया था। कबीर वाणी को लिखित रूप उनके पंथ और पंथेतर श्रद्धालुओं ने दिया और वे अलग-अलग भाषा और क्षेत्रों के थे। इसी कारण कबीर साहित्य अलग-अलग बोलियों और भाषाओं में संगृहीत है, जिसमें मुख्य रूप से राजस्थानी, पंजाबी और पूर्वी पाठ हैं। पर इनमें से कोई भी पाठ कबीर की मूल भाषा का प्रतिनिधित्व नहीं करता। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि मध्यकाल में काशी-मगहर के बीच बोलचाल की भाषा ही कबीर वाणी का मुख्य आधार रही होगी। सुफियों और योगियों की संगति के कारण उनकी भाषा में खडापन रहा होगा। कुल मिलाकर उनकी भाषा को सधुक्कडी या पंचमेली भी कहा जा सकता है।

कबीर के प्रामाणिक साहित्य, उनकी संख्या का निर्धारण और उनके पाठों के चयन को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है।

- (क) कबीर-साहित्य की संख्या—कबीर-साहित्य की व्यवस्थित खोज और उनकी संख्या निर्धारित करने का पहला प्रयास जी.एच. वेस्टकाट ने अपनी पुस्तक 'कबीर और कबीर पंथ' (सन् 1907) में किया। उन्होंने कबीर के 82 ग्रंथों की सूची बनाई। तत्पश्चात् मिश्र बंधुओं ने 'हिंदी नवरत्न' (सन् 1910) में 75, 'मिश्र बंधु विनोद' (सन् 1929) में 84 और डॉ. रामकुमार वर्मा ने 86 ग्रंथों की सूची दी। नागरी प्रचारिणी सभा ने यह संख्या 130 से 158 तक पहुँचा दी, परंतु विद्वानों का मानना है कि बाद की रचनाओं, जैसे—'अनुराग सागर', 'कबीर मंसूर' आदि में जिन विचारों का संग्रह है, वह कबीर के आडंबर विरोधी विचारों से मेल नहीं खाता, इसलिए इनकी प्रामाणिकता पर संदेह है।
- (ख) कबीर वाणी के प्रामाणिक पाठ के प्रयत्न-कबीर वाणी के प्रामाणिक पाठ को सर्वप्रथम नागरी प्रचारिणी सभा ने अयोध्या सिंह उपाध्याय के नेतृत्व में प्रस्तुत किया। तब से लेकर अब तक इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी है।
- 1. कबीर वचनावली (सन् 1916)—अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने सन् 1916 में 'कबीर वचनावली' का संपादन किया। हरिऔध जी ने 'बीजक', 'चौरासी अंग की साखी', 'कबीर शब्दावली' आदि ग्रंथों के आधार पर यह ग्रंथ तैयार किया। इसमें 781 साखियाँ एवं 228 पद शामिल हैं। इसकी प्रामाणिकता पर भी कुछ विद्वानों को संदेह है।

#### कबीर का जीवन और उनका साहित्य / 3

- 2. कबीर ग्रंथावली (सन् 1928)—कबीर के प्रामाणिक पाठ का दूसरा प्रयत्न सन् 1928 में श्यामसुंदर दास ने 'कबीर ग्रंथावली' के रूप में किया। उन्होंने दो प्राचीन हस्तप्रतिलिपियों के आधार पर यह कार्य किया। इसमें कुछ 809 साखियों, 400 पदों और रमैनियों को सम्मिलित किया गया है। यह कबीर का पूर्ण प्रामाणिक पाठ तो नहीं कहा जा सकता, परंतु इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास अवश्य माना जा सकता है।
- 3. संत कबीर (सन् 1943)—डॉ. रामकुमार वर्मा ने 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित कबीर की वाणी पर 'संत कबीर' नाम की स्वतंत्र पुस्तक सन् 1943 में संपादित की। उन्होंने कबीर वाणी पर पूर्व प्रकाशित अनेक पुस्तकों की प्रामाणिकता को संदेहास्पद मानते हुए 'गुरुग्रंथ साहिब' के पाठ को सर्वाधिक विश्वनीय और प्रामाणिक माना है। कबीर की भाषा पर पूर्वी प्रभाव के साथ–साथ इस ग्रंथ में यत्र–तत्र कबीर वाणी पर पंजाबी भाषा का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। इसमें 234 सलोग (साखियाँ), 228 सबद (पद) संकलित है। ऐतिहासिक महत्त्व रखते हुए भी 'संत कबीर' कबीर का पूर्ण प्रामाणिक और निर्दोष पाठ नहीं माना जा सकता।
- 4. कबीर बानी (सन् 1965)—अली सरदार जाफरी ने सन् 1965 में कबीर वाणी के 128 छंदों का संकलन तैयार किया। इसे तैयार करने के पीछे उनका उद्देश्य हिंदी परंपरा के साथ-साथ कबीर पर इस्लामी सूफी परंपरा के प्रभाव को उजागर करना था। हिंदू-मुस्लिम एकता राष्ट्रीय भावात्मक एकता की दृष्टि से इस संस्करण का महत्त्व असंदिग्ध है, लेकिन प्रामाणिकता की दृष्टि से संदेहपूर्ण है। डॉ. शुकदेव सिंह के अनुसार कबीर के नाम पर मिलने वाली रचनाओं में एक भी ऐसी रचना नहीं है, जिसे शत-प्रतिशत प्रामाणिक कहा जा सके। मौखिक, श्रवण तथा संकलन की परंपरा कबीर के जीवनकाल में ही प्रारंभ हो गई थी, अतः उनकी सारी कृतियों में प्रक्षेप और पाठांतर स्वाभाविक है।
- 5. कबीर ग्रंथावली (सन् 1961)—भारतीय हिंदी परिषद्, इलाहाबाद विश्वविद्यालय की ओर से सन् 1961 में डॉ. पारसनाथ तिवारी ने नए सिरे से 'कबीर ग्रंथावली' को संपादित किया। कबीर के नाम से मिलने वाली 4500 साखियों, लगभग 1600 पदों, 134 रमैनियों के गहन अध्ययन से उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि 20 पद (या सबद), 20 रमैनियां, 744 साखियां प्रामाणिक रूप से कबीर की सिद्ध होती हैं।
- 6. कबीर ग्रंथावली (सन् 1969)—डॉ. पारसनाथ तिवारी के निष्कर्षों पर पुनर्विचार करते हुए डॉ. माताप्रसाद गुप्त ने 'कबीर ग्रंथावली' का संपादन किया।
- 7. कबीर बीजक (सन् 1972)—बहुत से विद्वानों के अनुसार कबीर वाणी का सबसे पुराना और प्रामाणिक रूप बीजक है। उसी से प्रेरित होकर आधुनिक वैज्ञानिक पाठानुसंधान की प्रक्रिया अपनाते हुए डॉ. शुकदेव सिंह ने बीजक के विभिन्न संस्करणों के चार समुच्चयों—दानापुर, फतुहा, भगताही—अ, भगताही—ब का गहन तुलनात्मक अध्ययन और विश्लेषण किया। उन्होंने बीजक में 84 रमैनियों, 115 सबदों, 353 साखियों और कुछ अन्य विधाओं

को प्रामाणिक मानते हुए सिम्मिलित किया। नि:संदेह डॉ. शुकदेव के बीजक का महत्त्व निर्विवाद है, लेकिन सबद, साखी, रमैनी के अतिरिक्त अन्य विधाएँ, जैसे—कहरों, बेलियों, विप्रमतीसी आदि परवर्ती काव्य रूप हैं, इसलिए उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है।

8. कबीर वाङ्मय (खंड-1 रमैनी-1974, खंड-2 **सबद-1981. खंड-3 साखी-1976** )-कबीर वाङ्मय को तीन खंडों-रमैनी, सबद, साखी में संपादित और प्रकाशित डॉ. जयदेव सिंह और डॉ. वासदेव ने किया। उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि कबीर की वाणी पर मुख्यत: दो क्षेत्रों में लाभ हुआ है-एक साहित्यिक विद्वानों द्वारा और दूसरा कबीरपंथियों द्वारा। किंतु कोई भी ऐसा ग्रंथ नहीं है, जो कबीर के समग्र साहित्य को एक साथ उपलब्ध कराता हो, इसलिए एक ऐसे ग्रंथ की बहुत आवश्यकता थी. जिसमें कबीर का संपूर्ण साहित्य विस्तृत व्याख्या के साथ उपलब्ध हो। कबीर वाङ्मय इसी दिशा में किये गये प्रयासों का परिणाम है। डॉ. जयदेव सिंह ने 'कबीर ग्रंथावली' और 'बीजक' के बीच का रास्ता निकाला और पहले खंड में 84 रमैनियों, दूसरे खंड में 350 सबदों, परिशिष्ट-1 में 'कबीर बीजक' के अन्य काव्य रूपों. तीसरे खंड में 809 साखियों को रखा और पूर्व में जो भाषा संबंधी अशुद्धियाँ रह गई थीं, उन्हें सुधारते हुए अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक पाठ देने का प्रयत्न किया। भाषा का शुद्धिकरण और पाठ का निर्धारण कबीर की भाषा को 'पूर्वी' मानकर किया गया है। इसकी विशेष उपयोगिता 'भावार्थ बोधिनी व्याख्या' के कारण है।

#### अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के जीवन का संक्षेप में परिचय दीजिए। उत्तर-भारत में आत्मकथा, जीवन-परिचय लिखने की वैसी परम्परा नहीं रही जैसी कि पश्चिम के देशों में पायी जाती है। हमारे यहां के महापुरुष अपने विषय में कुछ भी कहने में संकोच करते रहे, क्योंकि वे उसे आत्म-प्रशंसा मानकर इस कार्य को मिथ्या गर्व या दंभ का काम समझते रहे। अत: उनके विषय में प्रामाणिक सामग्री का अभाव रहा है। जो कुछ थोड़ी-बहुत जानकारी मिलती है, वह या तो उनकी रचनाओं में यत्र-तत्र बिखरी सामग्री से, अथवा उनके समकालीन या परवर्ती लोगों द्वारा दिये गये संकेतों से। ये लोग प्राय: इन महापुरुषों के अनुयायी, श्रद्धालु भक्त तथा पंथ-सम्प्रदाय के सदस्य रहे हैं। अत: उनके द्वारा कही-लिखी गयी बातें प्रामाणिक कम हैं. उनमें अंधश्रद्धा की अभिव्यक्ति अधिक है। इन महापुरुषों को अलौकिक, परम गरिमामंडित सिद्ध करने के लिए जन-समाज में किंवदंतियां, जनश्रुतियां तथा चमत्कारपूर्ण दंतकथाएं भी प्रचलित रही हैं। अत: उनसे तथ्य प्राप्त करना उतना ही कठिन है, जितना भूसे के अम्बार से अनाज के दाने पाना।

संत कबीर के संबंध में भी यह सच है। उन्होंने अपने संबंध में बहुत कम कहा है। उनके शिष्यों, भक्तों तथा पंथानुयायियों ने उनके विषय में जो कुछ लिखा है, उसमें सत्य कम, कल्पना तथा अंध श्रद्धा-भाव अधिक है। कबीर के इन प्रशंसकों ने न केवल उनका प्रशस्ति-गान ही किया है, अपितु अपनी रचनाओं को कबीर

#### 4 / NEERAJ : कबीर का विशेष अध्ययन

की रचनाएं बताकर उनके नाम से ऐसा साहित्य भी प्रचारित किया है, जिसे पढ़कर पाठक भ्रम में पड़ सकता है। यह साहित्य मौखिक भी है तथा लिखित भी।

कबीर का व्यक्तित्व तथा कृतित्व इतना क्रांतिकारी तथा प्रभावशाली रहा है कि उनको विभिन्न सम्प्रदायों, मतों, पंथों के लोग श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं। हिन्दू उन्हें वैष्णव भक्त मानते हैं, मुसलपान पीर कहते हैं, सिक्खों के लिए वह 'भगत' हैं और कबीरपंथी उन्हें ईश्वर का अवतार बताते हैं। नव-वेदांती उन्हें मानवधर्म-प्रवर्तक कहते हैं, तो साम्यवादी विचारधारा वाले उन्हें समाज का उत्थान करने वाले, प्रत्येक प्रकार के अत्याचार-अन्याय-शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने वाले क्रांतिकारी। समाज-सुधारकों को उनके समाज-सुधार संबंधी विचार आकृष्ट करते हैं, तो अद्वैतवादियों को उनके निर्गुण ब्रह्म, माया, संसार की क्षणभंगुरता के संबंध में विचार।

कबीर के जीवन-वृत्त के संबंध में अनेक मत है। उनकी एक काव्य-पंक्ति के अनुसार तो उनका जन्म-स्थान मगहर नामक छोटा-सा कस्बा है, जो गोरखपुर से लगभग तेरह मील दूर है तथा जहां आज भी नदी के तट पर एक समाधि बनी हुई है—

#### पहिले दरसन मगहर पाइयो, फुनि कासी बसे आई।

पर अधिकांश लोग उनका जन्म-स्थान काशी जनपद का लहरतारा नामक स्थान मानते हैं। स्वामी परमानन्द दास कृत 'कबीर मंसूर', लहनासिंह की पुस्तक 'कबीर कसौटी' तथा स्वामी युगलानन्द के चिरत्रबोध उनकी जन्मभूति लहरतारा ही मानते हैं। प्रचलित दंतकथा भी यही कहती है कि मुसलमान संतान-विहीन जुलाहा दम्पित नीरू और नीमा को कबीर पिरत्यक्त शिशु के रूप में इसी स्थान पर तालाब के किनारे मिले थे और उन्होंने ही उनका पालन-पोषण किया था। उनका अधिकांश जीवन काशी में बीता था—

#### बहुत बरस तप कीया कासी। भस भइया मगहर को वासी॥

उनकी जन्म-तिथि तथा निधन-तिथि के संबंध में भी विवाद है। केवल अनुमान लगाया गया है कि वह संवत् 1455 से लेकर संवत् 1569 तक जीवित रहे। **डॉ. माताप्रसाद गुप्त** ने धर्मदास कृत 'द्वादश पंथ' के आधार पर उनका जन्म संवत् 1455 तथा निधन संवत् 1569 माना है।

#### चौदह सौ पचपन साल गए, चंद्रवार एक ठाठ ठए। समंत पंद्रह सौ उनहतरा हाई। सतगुरु चले उठ ऊंसा जाई।

उनकी मृत्यु के संबंध में भी एक किंवदंती है कि उनके शव को लेकर हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हुआ, दोनों उन का अन्तिम संस्कार अपनी-अपनी रीति से करना चाहते थे। विवाद बढ़ा तो पाया गया कि शव के स्थान पर वहां केवल फूल थे। वे बांट लिए गये और दोनों सम्प्रदायों के शिष्यों ने उन्हें अपनी-अपनी रीति से उनका संस्कार किया। जहां तक उनकी कब्र का प्रश्न है, कुछ मानते हैं कि मृत्यु से कुछ पूर्व वह जानबुझ कर काशी से मगहर

आ गये थे और वहीं उनकी मृत्यु हुई और वहीं उन्हें दफनाया गया; पर कुछ मानते हैं कि उनको अयोध्या के निकट रतनपुर नामक स्थान पर दफनाया गया।

प्राय: कबीर को स्वामी रामानन्द का शिष्य बताया जाता है और इस मत की पुष्टि के लिए निम्नलिखित पंक्ति उद्धृत की जाती है।

#### कासी में हम प्रकट भए हैं, रामानन्द चेताये।

जनश्रुति है कि मुसलमान परिवार में पाले-पोसे जाने के कारण कबीर को वैष्णव धर्म में दीक्षित नहीं किया गया। कबीर को पता था कि स्वामी रामानन्द प्रतिदिन प्रात:काल झुटपुटे में काशी के गंगा-तट पर स्नान करने जाते हैं, अत: एक दिन वह गंगा-तट की सीढ़ियों पर लेट गये। जब स्वामी जी गंगा-स्नान के लिए सीढ़ियां उतर रहे थे, उनकी खड़ाऊं कबीर के शरीर से टकराईं ओर उनके मुख से यकायक 'राम-राम' निकल पड़ा। कबीर ने उसे ही गुरु-मंत्र मान लिया और स्वयं को रामानंद का शिष्य कहने लगे।

इस घटना का उल्लेख कई रचनाओं—'भक्त व्यास', 'कबीर साहब की परचई' तथा नाभादास के भक्तमाल' में मिलता है। परन्तु काल-गणना से यह भी केवल मनगढ़ंत घटना सिद्ध होती है। क्योंकि रामानन्द का देहावसान संवत् 1456 में हुआ था और तब कबीर की आयु केवल 12 वर्ष की हो सकती है। इतनी छोटी आयु में दीक्षा की बात विश्वसनीय नहीं लगती। इसके विपरीत मौलाना गुलाम सरवर ने अपने ग्रंथ 'खजीनतुल असिफया' में शेख तकी को उनका गुरु बताया है। 'कबीर बीजक' में भी एक पंक्ति है—

#### मानिकपूर कबीर बसेरी, मदहति सुनी शेख तिक केरी।

अतः लगता है कि कबीर के गुरु शेख तकी ही थे। कबीर ने हृदय से भक्त तथा मनोवृत्ति से सांसारिक माया जाल से विरक्त होते हुए भी अपना जीवन एक सद्गृहस्थ के रूप में बिताया। वह संन्यासी या विरक्त साधु न बने; पारिवारिक जुलाहे का पेशा अपनाया, करघे पर वस्त्र बुनते रहे और वस्त्र बुनते-बुनते ही काव्य-रचना करते रहे। उन्होंने विवाह किया, कुछ लोगों के अनुसार उनके एक नहीं अधिक पित्नयां थीं। उनकी पित्नयों के नाम भी बताये गये हैं—लोई, रमजिनया, धिनया। गुरुग्रंथ साहब में पंक्तियां हैं—

#### मेरी बहुरिया को धनिया नाउ लै राखिओ रामजनिया नाउ।

हो सकता है कि इस धनिया या रमजनिया से कबीर के स्वभाव का मेल न हो पाया हो और उन्होंने लोई नामक युवती से विवाह किया हो। पर अब कबीर को लोई का ही पित माना जाता है तथा कहा जाता है कि उससे उनके एक पुत्र कमाल तथा एक बेटी कमाली हए। इस संबंध में एक पंक्ति भी है—

#### बूड़ा वंश कबीर का, उपजा पूत कमाल।

व्यक्तित्व-शरीराकृति की दृष्टि से कबीर का व्यक्तित्व प्रभावशाली, रौबीला या भव्य नहीं था। उनके जो चित्र प्राप्त हैं उनसे लगता है कि वह मंझले कद के, साधारण शरीर वाले व्यक्ति थे, उनका चेहरा लम्बा था। वह अनपढ़ थे, उनकी पोथी-ज्ञान में आस्था भी नहीं थी-